दीपावली पर्व

दीपावली भारत का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पर्व है। इस पर्व के साथ विभिन्न संस्कृतियों एवं महापुरूषों के जीवन की महत्त्वपूर्ण स्मृतियों का ऐसा सम्मिश्रण हो गया है कि उससे किसी एक को अलग करना कठिन है। अलग करना आज आवश्यक भी नहीं है क्योंकि ऐसे पर्वों के सम्यग् आयोजन से ही भावात्मक एकता का निर्माण होता है। इसके विकास में जैनेतर धर्मावलम्बियों का जैसा योग है वैसा ही जैन धर्मावलम्बियों का भी योगदान है। प्राचीन साहित्य के उल्लेखानुसार दीपावली का एक सम्बन्ध भगवान महावीर के निर्वाण से है। भगवान महावीर इस युग के अन्तिम तीर्थंकर थे। उनके निर्वाण के साथ ही सम्पूर्ण विश्व से एक दिव्य ज्योति विलीन हो गई। उस स्मृति के प्रतीक स्वरूप जनता ने दीप ज्योति कर अमावस्या के बाह्य अंधकार को मिटाने का प्रयत्न किया। उस दिव्य ज्योतिपुंज की स्मृति में केवल बाह्य दीपों को प्रज्वलित कर ही सन्तुष्ट नहीं होना है, उसके लिए आंतरिक ज्योति का जागरण भी आवश्यक है।

परम अहिंसक प्रभु महावीर के निर्वाण की स्तुति स्वरूप सामूहिक ध्यान, जप आदि तो करने ही चाहिए साथ ही दीपावली के अवसर पर पूजन के समय सर्वप्रथम भगवान महावीर प्रभु की भाव वन्दना तथा अपने बही, पत्रों का प्रारम्भ करते समय संस्कृति परक शब्द वन्दना हो तो अपने परिवार में महापुरूषों की पावन स्मृति के साथ जैनत्व के संस्कार स्वतः उजागर होंगे।

दीपावली पूजन विधि

आवश्यक सामग्री : अक्षत (चावल), कुंकुम, मोली, गुड़, जल-कलश, नारियल, बड़ा कलश (नारियल रखने हेतु), सिक्के, बाजोट, लाल वस्त्र, स्वस्तिक बनाने हेतु चावल, थाली, मंगल भावना यंत्र आदि ।

* प्रारंभिक भाग

- नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ करें ।
- निम्न मंत्रोच्चार करते हुए थाली के मध्य कुंकुम से **अर्हम्** लिखें व बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर चावल से **स्वस्तिक** 卐 बनायें -

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ।।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम् ।।

(अर्हम् व स्वस्तिक निर्माण के पश्चात् भी उपरोक्त मंत्रोच्चार हो सकते हैं ।)

• स्वयं के व परिवार के प्रमुख तथा उपस्थित सभी के निम्न मंत्रोच्चार के साथ मस्तक पर **तिलक** करें व कलाई पर **मोली** बांधें -

धम्मो मंगल मुक्किठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
संती संतिकरे लोए, पत्तो गइ मणुत्तरं।।

धर्मस्य शरणं ग्राह्यं, सर्वदा सुखदं वरम् ।
धर्मस्त्राता पिता माता, भ्राता समृद्धिदायकः ।।

• कलम के मोली बांधें । कम्प्युटर आदि हो तो निम्न मंत्रोच्चार के साथ कुंकुम से अथवा स्टीकर से स्वस्तिक अंकित करें -

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः, सिद्धाश्च सिद्धि-स्थिताः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।।
श्री सिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा, रत्न-त्रयाराधकाः।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।

*** मंगल भावना यंत्र की स्थापना**

सामूहिक मंगल भावनायें करते हुए बाजोट या अन्य समुचित स्थान पर **मंगल भावना यंत्र** की स्थापना करें -

श्री सम्पन्नोऽहं स्याम्	ह्री सम्पन्नोऽहं स्याम्	धी सम्पन्नोऽहं स्याम्
धृति सम्पन्नोऽहं स्याम्	शक्ति सम्पन्नोऽहं स्याम्	शान्ति सम्पन्नोऽहं स्याम्
नंदि सम्पन्नोऽहं स्याम्	तेजः सम्पन्नोऽहं स्याम्	शुक्ल सम्पन्नोऽहं स्याम्

*** मंत्रोच्चार व बही-खातों का शुभारंभ**

सभी सामूहिक निम्न मंत्रोच्चार करें -

णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स

(संक्षिप्त जप करें - ११ बार)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं गौतमस्वामिप्रमुख सर्व साधुभ्यो नमो नमः

- **लोगस्स** का पाठ करें -

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउव्वीसंपि केवली।।
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।
कुंथं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।
कित्तिय-वंदिय-महए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरोग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।

- बही-खातों के मुख्य पृष्ठों पर निम्नांकित शब्द-वंदना अंकित करें -

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री
णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स
णमो अरहताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पाव पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

अ	ए	सि
रा	आ	मं
उ	प	सा

ज्ञान	दर्शन
चारित्र	तप

अ	ए	सि	
रा	आ	मं	
उ	प	सा	

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६
ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं

श्री भगवान महावीर जैसा दिव्य ज्ञान, श्री गौतम गणधर जैसा भव्य ध्यान, श्री भरत चक्रवर्ती जैसी अनासक्ति, श्री बाहुबलि जैसी शक्ति, श्री अभयकुमार जैसी निर्मल बुद्धि, श्री धन्ना शालिभद्र जैसी ऋद्धि-सिद्धि, सेठ सुदर्शन जैसा शील, श्री कयवन्ना जैसा सौभाग्य, माता मरु देवी जैसी सुखश्री के लिए शुभ वीर संवत् _____ वि.सं. _____ तिथि _____ वार _____ दिनांक _____ शुभ लग्न _____ एवं शुभ नक्षत्र _____ में श्री दीपमालिका (महावीर जयन्ती आदि) के मंगल पर्व पर भगवान महावीर के मंगलमय स्मरण के साथ बही खातों का सानन्द शुभारम्भ किया।

- निम्न मंत्रों का उच्चारण करें -

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्र महितो, वीरं बुधाः संश्रिताः।
वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ।
वीरात् तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो ।
वीरे श्री-धृति-कीर्ति-कान्तिनिचयो, हे वीर ! भद्रं दिश।।

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्-साक्षी मार्ग-प्रकटनपरो भानुरिव यो,
महावीरस्वामी, नयन-पथ-गामी, भवतु मे।।

- महावीर स्तुति (जय महावीर भगवान....) आदि मंगल गीतों का एकाग्र होकर संगान करें ।
- **मंगल पाठ** के साथ सम्पन्न करें ।